गांधी जी का विचार मन को भाए तो जरूर अपनाएं : मोरारी बापू

अनिरुद्ध शर्मा | नई दिल्ली

राजघाट पर मानस महात्मा रामकथा के समापन के दौरान मानस मर्मज्ञ मोरारी बापू ने कहा कि यदि युवाओं को इस कथा के जरिए गांधी जी का कोई सूत्र, कोई विचार दिल तक पहुंचा हो तो उसे अपनाएं। यह सूत्र जीवन के किसी न किसी मोड़ पर अवश्य काम आएगा। हम अपनी क्षमता की पहचान करें और उसका उपयोग समाज के अंतिम पंक्ति के आदमी की मदद के लिए करें। नौंवे दिन की कथा में बापू ने यह भी कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने सर्वप्रथम गांधी जी को राष्ट्रपिता कहा था। राष्ट्रपिता की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि जो परिवार का पालक हो, सुशिक्षित करे, संरक्षित करे और सबका सेवक हो, वही पिता है। पूरा देश गांधी जी के परिवार की तरह था, इसलिए बापू राष्ट्रपिता हैं। बापू ने गांधी जी व उनकी विचारधारा को शाश्वत बताया। राजघाट पर हुई कथा कोई धर्म कथा या ज्ञान कथा नहीं थी, यह तो प्रेम यज्ञ था, जिसमें हर रोज किसी न किसी गांधी अनुयायी ने आकर अपने प्रेम व सद्भाव की आहूतियां दीं।

बापू से पूछा गया कि उनकी बातें युवाओं को बहुत छूती हैं और मानस में तो सबकुछ है तो वे मानस सिनेमा और मानस क्रिकेट जैसे विषयों पर भी कभी रामकथा कहें। इसके जवाब में बापू ने कहा कि उन्हें अलग से इन पर बोलने की जरूरत नहीं है। उनकी कथा ही उनकी क्रिकेट है। कहा, मैं व्यासपीठ पर बैठकर बल्लेबाजी ही कर रहा हूं। बस आउट होना चाहता हूं, मेरी उछाली गेंद पकड़ लो। किसी सूत्र व किसी विचार को पकड़ लो और मुझे आउट कर दो। अगर सूत्र सीमा रेखा से बाहर (घरों में बैठकर टीवी पर देखते हुए) भी लपक लो तो भी मैं आउट हो जाऊंगा। मानस की कोई पंक्ति कैच करके विजयी हो जाओ। उन्होंने कहा कि वे हर रोज नई गेंद लेकर आते हैं और गेंद से कभी कोई छेड़छाड़ नहीं करते। जो गांधी का है उसे गांधी, जो गालिब का है उसे गालिब, जो मीर का उसे मीर, जो नरसी का उसे नरसी के नाम से ही बताते हैं। उन्होंने इन बातों को मानस क्रिकेट की संज्ञा दी। बापू ने कहा कि जो भी बात साधना के अनुकूल पड़े, श्रोताओं के मार्गदर्शन के अनुकूल पड़ती है उन्हें मैं कहीं से भी ले लेता हूं, फिर वो फिल्मी गीतों की पंक्तियां ही क्यों न हों। संगीत ईश्वर का रूप है, शब्द ब्रह्म है, नृत्य परमात्मा की अंगड़ाई है। हर कला ईश्वर की ओर ले जाती है। उन्होंने कहा कि उनकी मानस कथा में सिनेमा तो बार-बार आ ही जाता है। फिल्मी गीतों को गुनगुनाने व गाने का इरादा सत्य समझाने का है। सत्य कहीं से मिले उसका इस्तेमाल करना चाहिए। यही मानस सिनेमा है जो हर कथा में साथ-साथ चलती रहती है। एक शेर के साथ उन्होंने मानस महात्मा का समापन किया कि हम तो खैर कांटों में जिए, खुदा करे तेरा दामन गुलों से भर जाए।

मानस महात्मा रामकथा का अंत सुनाते मोरारी बापू।

रामकथा में लगी शायरी की झड़ी

नई दिल्ली मोरारी बापू अपनी कथा में अपने प्रसंग के अनुकूल जो भी शेर पड़ता है, उसे शायर के नाम के साथ पूरी अदायगी के साथ सुनाते हैं। प्रेम की व्याख्या करते हुए उन्होंने यह शेर सुनाया। पहली शर्त जुदाई है, इश्क बड़ा हरजाई है। मैं तो इस डाली से टूटा हूं, दुनिया क्यूं मुरझाई है। गुम है हैं होश हवाओं के, ये किसकी खुशबू आई है। गांधी जी पर उन्होंने कहा कि ये और बात है कि वो खामोश रहते हैं, वो बड़े हैं, बड़े ही रहते हैं। एक और शेर - गम ये नहीं कि जो मिले पत्थर के लोग थे, अफसोस इनमें चंद मेरे घर के लोग थे। इसी तरह, फसले बहार आई है, सुफियों पियो शराब। लो हो गई नमाज, मुसल्ला उठाइए। अपनी बातों पर वे कहते हैं - सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं, सूरत बदलनी चाहिए। कथा समाप्त करने की बारी आई तो उन्होंने शायराना अंदाज में कहा - हमारा तो क्या, हम तो दीवाने ठहरे। चले तो चले, बैठे तो बैठे। लेकिन तुम्हारी नजर इतनी बेताव क्यूं है, क्या तुम्हें भी कोई गम सताने लगा है। नशे में जमाना, जमाने में हम भी। अब हम पर भी इल्जाम आने लगा है। मानस के प्रति अपने लगाव को जाहिर करने के लिए उन्होंने जफर का शेर सुनाया मुझे सूली पर चढ़ाने की जरूरत क्या है, मेरे हाथों से कलम छीन लो मर जाऊंगा।